



## 2 कश्मीरी सेब

बाज़ार से कुछ भी खरीदते समय सतर्क रहना बेहद ज़रूरी है। हमारी असावधानी सामने वाले को धोखा देने के लिए प्रेरित करती है। यदि हम 'जागो ग्राहक जागो' वाली जागरूकता को अपनाएँगे, तो सामनेवाले को बेईमानी का अवसर नहीं मिलेगा तथा हम भी अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएँ खरीद सकेंगे।

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ-न-कुछ सिखा देती है।

— सुकरात



कल शाम को चौक में दो-चार ज़रूरी चीज़ें खरीदने लगा था। पंजाबी मेवाफ़रोशों की दुकानें रास्ते में ही पड़ती हैं। एक दुकान पर बहुत अच्छे, रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए नज़र आए। जी ललचा उठा। आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टमाटर को पहले कोई मुफ़्त में भी न पूछता था। अब टमाटर भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबों के पेट भरने की चीज़ थी। अमीर लोग तो उसका हलवा ही खाते थे; मगर अब पता चला है कि गाजर में भी बहुत विटामिन हैं; इसलिए गाजर को भी मेज़ों पर स्थान मिलने लगा है और सेब के विषय में तो यह कहा जाने लगा है कि एक सेब रोज़ खाइए तो आपको डॉक्टर की ज़रूरत न रहेगी। डॉक्टर से बचने के लिए हम निबौरी तक खाने को तैयार हो

सकते हैं। सेब तो रस और स्वाद में अगर आम से बढ़कर नहीं है, तो घटकर भी नहीं। हाँ, बनारस के लँगड़े और लखनऊ के दशहरी और बंबई के अल्फ़ाँसो की बात दूसरी है। उनकी टक्कर का फल तो संसार में दूसरा नहीं है; मगर उनमें विटामिन और प्रोटीन हैं या नहीं? हैं, तो काफ़ी हैं या नहीं हैं, इन विषयों पर अभी किसी पश्चिमी डॉक्टर की रिसर्च देखने में नहीं आई। सेब को यह विशेषता मिल चुकी है कि अब वह केवल स्वाद की चीज़ नहीं है, उसमें गुण भी हैं। हमने दुकानदार से मोल-भाव किया और आधा सेर सेब माँगे।





दुकानदार ने कहा— “बाबूजी! बड़े मजेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी।”

मैंने रूमाल निकालकर उसे देते हुए कहा— “चुन-चुनकर रखना।”

दुकानदार ने तराजू उठाई और अपने नौकर से बोला—“आधा सेर कश्मीरी सेब निकाल ला। चुनकर लाना।”

नौकर चार सेब लाया। दुकानदार ने तौला, एक लिफ़ाफ़े में उन्हें रखा और रूमाल में बाँधकर मुझे दे दिया। मैंने चार आने उसके हाथ में रखे।

घर आकर लिफ़ाफ़ा ज्यों-का-त्यों रख दिया। रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं है। फल खाने का समय तो प्रातःकाल है। आज सुबह मुँह-हाथ धोकर जो नाश्ता करने के लिए एक सेब निकाला, तो वह सड़ा हुआ था। एक रुपये के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दुकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर वह आधा सड़ा हुआ था। अब संदेह हुआ, दुकानदार ने मुझे धोखा तो नहीं दिया है। तीसरा सेब निकाला। वह सड़ा तो न था; मगर एक तरफ़ दबकर बिल्कुल पिचक गया था। चौथा देखा। वह यों तो बेदाग था; मगर उसमें एक काला सुराख था, जैसा अक्सर बेरों में होता है। काटा तो भीतर वैसे ही धब्बे दिखाई दिए जैसे कि सड़े बेर में होते हैं। एक सेब भी खाने लायक नहीं। चार आने पैसों का इतना ग़म न हुआ, जितना समाज के इस

चारित्रिक पतन का। दुकानदार ने जान-बूझकर मेरे साथ धोखेबाज़ी का व्यवहार

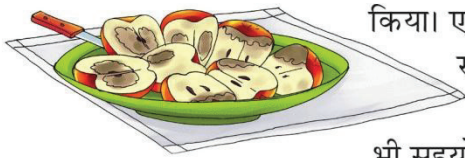
किया। एक सेब सड़ा हुआ होता, तो मैं उसको क्षमा के योग्य समझता।

सोचता, उसकी निगाह न पड़ी होगी। मगर चारों-के-चारों खराब

निकल जाएँ, यह तो साफ़ धोखा है। मगर इस धोखे में मेरा

भी सहयोग था। मेरा उसके हाथ में रूमाल रख देना मानो उसे धोखा देने

की प्रेरणा थी। उसने भाँप लिया कि यह महाशय अपनी आँखों से काम लेने वाले जीव नहीं हैं और न इतने चौकस हैं कि घर से लौटाने आएँ। आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करता। किसी थाने, कचहरी या म्यूनिसिपिलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख़ अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक-आध छटाँक कम कर लें; लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस का नोट दे आते थे, तो आपको घबराने की कोई ज़रूरत न थी। आपके रुपये सुरक्षित थे।



मुझे याद है, एक बार मैंने मुहर्रम के मेले में एक खोमचेवाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई, तो खोमचेवाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित्त भाव से अठन्नी लौटा दी और उलटे मुझसे क्षमा माँगी। यहाँ कश्मीरी सेब के नाम से सड़े हुए सेब बेचे जाते हैं! मुझे आशा है, पाठक बाज़ार में जाकर मेरी तरह आँखें बंद न कर लिया करेंगे, नहीं तो उन्हें भी कश्मीरी सेब ही मिलेंगे।

—प्रेमचंद

